Jayant Sahasrabudhe

17 April 1966 - 2 June 2023





BBA in Hotel Management & B.A.LLB. : M. : 9340641103, 9584679586

महाकौशल विज्ञान परिषद (विज्ञान भारती की प्रांतीय इकाई)

जिज्ञासा-2023, 17 वीं राष्ट्रीय कार्यशाला 3-7 अक्टूबर, 2023

जिज्ञासा २०२३

Mahakaushal Vigyan Parishad

17th National Workshop - JIGYASA-2023 3rd - 7th October, 2023



संपादक



[Established by the M.P. State Legislature Act No. 26/2018, Recognized by UGC New Delhi]





से अवार्ड प्राप्त करते हुए इंजी. दिवाकर सिंह र्ज माननीय कुलाधिपति, नरदार पटेल विश्वविद्यालय, बालाघाट (म.प्र.)

AGRICULTURE

As per the norms of ICAR

Diploma in Agriculture

B.Tech. (Agril.) Engg.

M.Sc. (Ag.)

DI BIICIN

ANAGEMENT

B.Sc (Hons.) Agriculture

Agronomy / Horticulture



PHARMACY

PCI Approved

D. Pharma / B. Pharma

Pharmacology/ Pharmaceutics

IARMACEUTICAL ANAGEMENT

M. Pharma



NURSING

INC Approved

GNM / B.Sc. (Nursing)

ę

IN CENTRAL INDIA

. . .

. . .

ADMISSION

OPEN

RISING

M.TECH

Mining Engg.

-Powered

R Relianc

> Industrial Management Engg. Structural Engg. Computer Science & Engg. **Digital Communication Engg.** Environmental Engg.

ENGINEERING

POLYTECHNIC B.TECH

Computer Sc. & Engg. (CS & E)

Mining & Mine Surveying (MMS)

Fire & Safety Engg. (F & SE)

Full Time / Part Time

Mechanical Engg. (ME)

Civil Engg. (CE) Electrical Engg. (EE)

AICTE Approved

COMPUTER APPLI.

DCA / PGDCA / BCA MCA / B.Sc.(CS) / M.Sc.(IT)

B.Ed (Part Time) LAW BCI Approved

NCTE Approved

D.El.Ed. / B.Ed. / M.Ed.

MANAGEMENT **BBA** (Hons.) EDUCATION MBA Full Time / Part Time

DIPLOMA (Hotel Management) PG DIPLOMA (Hotel Management) BHM (Bachelor of Hotel Management)

RAMEDICAL

BPT (Bachelor of Physiotherapya) पेस्ट डॉक्टर बनने का सनहरा अवर



ourse

\$7 Cipla LUPIN Ga छात्रों को शासन ß **S**ipca Ð Co kotak Fusion के योजनानुसार Glenmark विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को एजुकेशनल टूर
विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को एजुकेशनल टूर
विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को एजुकेशनल टूर

• बस, केन्टीन, हॉस्टल, एटीएम, एसी ऑडिटोरियम एवं प्लेग्राउंड की सुविधा • अत्याधनिक कम्पयुटर लैब एवं सेंटल लाइब्रेरी

विश्वविद्यालय कैम्पसः वारासिवनी रोड, डोंगरिया, बालाघाट सिटी कैम्पस : सरदार पटेल कैम्पस, गायखुरी, बालाघाट

<u> सिवनी ऑफिस : (, 9302956423</u> <u>मण्डला ऑफिस : ६ 9131460038</u> 65562646 3226337, 9174192111, 9174202 Follow us on 🌐 www.spubgt.ac.in 🎬 info@spubgt.ac.in 🕜 facebook/sardarpateluniversity 💿 youtube.com/user/sardarpateluniversity 💿 instagram/sardarpateluniversit



National President Dr. Shekhar C. Mande

Secretary General **Dr. Sudhir S. Bhadauria**

Patrons:

Prof. K I Vasu Bangalaru

Dr. Anil Kakodkar Mumbai

Dr. G. Madhavan Nair Thiruvananthapuram



<u> संदेश</u>

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि महाकौशल विज्ञान परिषद लगातार १६ वर्षों से जिज्ञासा राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन कर रहा है इस वर्ष १७ वीं जिज्ञासा का आयोजन हो रहा है। इस वर्ष की जिज्ञासा का विषय 'अंतरिक्ष में आत्मनिर्भर भारत' है जो कि विद्यार्थियों में विज्ञान के प्रति रूचि एवं उनकी जिज्ञासाओं के लिये अत्यंत महत्वूपर्ण है।

वैज्ञानिकों की राष्ट्र निर्माण में अहम् भूमिका होती है और यह आयोजन युवा वैज्ञानिकों, विद्यार्थियों एवं शोधार्थियो के लिये दिशादर्शन का कार्य करेगा।

आयोजन की सफलता के लिये मेरी हार्दिक शुभकामनाएं

शेखर सी. मांडे राष्ट्रीय अध्यक्ष, विज्ञान भारती

Address : Vijnana Bharati, A-4, First Floor, Gulmohar Park, New Delhi - 110049 Telefax: 011 410408, Email : vijanabharti@gmail.com, www.vibhaindia.org



Patrons:

Prof. K I Vasu Bangalaru

Dr. Anil Kakodkar Mumbai

Dr. G. Madhavan Nair Thiruvananthapuram



<u> संदेश</u>

National President Dr. Shekhar C. Mande

Secretary General **Dr. Sudhir S. Bhadauria**

विज्ञान लोकव्यापीकरण की राष्ट्रीय कार्यशाला का इस वर्ष १७ वां आयोजन होने जा रहा है जो महाकोशल विज्ञान परिर्षद एवं मध्यप्रदेश विज्ञान एवं तकनीकी परिषद का संयुक्त आयोजन है। इसका विषय ''अंतरिक्ष में आत्मनिर्भर भारत'' है जो कि अत्यंत समसामायिक है। स्कूल एवं कॉलेज के विद्यार्थियों के लिये आयोजित स्पर्धायें एवं वैज्ञानिकों के व्याख्यानों से विद्यार्थियों में वैज्ञानिक चेतना का जागरण होगा एवं भविष्य में विज्ञान के क्षेत्र में कार्य करने की प्रेरणा भी प्राप्त होगी।

आयोजक बधाई के पात्र है कि यह कार्यशाला लगातार प्रतिवर्ष आयोजित करते आ रहे हैं।

हार्दिक शुभकामनाएं

हार्दिक मंगल शुभकामनाओं सहित।

सुधीर सिंह भदौरिया महासचिव, विज्ञान भारती

Address : Vijnana Bharati, A-4, First Floor, Gulmohar Park, New Delhi - 110049 Telefax: 011 410408, Email : vijanabharti@gmail.com, www.vibhaindia.org

Dr. Anil Kothari

डॉ. अनिल कोठारी Director General महानिदेशक

Madhya Pradesh Council of Science & Technology मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद Vigyan Bhawan, Nehru Nagar, Bhopal - 462003 (M.P.)

विज्ञान भवन, नेहरू नगर, भोपाल - 462003 (म.प्र.) Tel : 0755 - 2671800, Fax : 2671600 E-mail : dg@mpcost.nic.in., www.mpcost.gov.in



<u>संदेश</u>

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि महाकोशल विज्ञान परिषद (विज्ञान भारती की प्रांतीय इकाई) द्वारा प्रतिवर्ष विज्ञान के लोकव्यापीकरण की ५ू दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला जिज्ञासा का आयोजन किया जाता है, उसी क्रम में इस वर्ष भी १७ वीं जिज्ञाासा कार्यक्रम ०३ अक्टूबर से ०७ अक्टूबर २०२३ का आयोजन किया जा रहा है।

मुझे आशा है कि स्मारिका के प्रकाशन से विद्यार्थियों, शोधार्थियों व शिक्षकों को विज्ञान के नयें आयामों के बारे में न केवल जानकारी मिलेगी, बल्कि सीखने और नया करने की उनकी रूचि में भी अभिवृद्धि होगी।

हार्दिक मंगल शुभकामनाओं सहित।

प्रो. अनिल कोठारी

MADHYA PRADESH BHOJ (OPEN) UNIVERSITY, BHOPAL



NAAC ACCREDITED GRADE " A



Madhya Pradesh Bhoj (Open) University (Established Under an Act of State Assembly in 1991) मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय



नोट:-बी.एड., डी.एल.एड., बी.एड. (विशेष शिक्षा), आधार पाट्यक्रम (विशेष शिक्षा) में प्रवेश परीक्षा के माध्यम से होता हैं। जिसकी सूचना अलग से विज्ञापित व विश्वविद्यालय की वंबसाइट में अपलोड की जायेगी

क्षेत्रीय केन्द्रों के पते निम्नानुसार हैं:- 1. क्षेत्रीय निदेशक, राजा भोज मार्ग (कोलार रोड) भोपाल — 482018 (म.प्र), फोन ने —0755—2490494.2492105.2492272 2. क्षेत्रीय निदेशक, देवी अंडिल्या विश्वविद्यालय परिसर आई.एम.एस. भवन, खण्डवा रोड, इन्दौर — 452001 (म.प्र) फोन ने ...0731—2465689 3. क्षेत्रीय निदेशक, न्यू कलैक्टेट रोड.सत्यम रेजीडेंसी टॉवर के पास, प्राइम डॉस्पिटल वाली गली, कैलाश नगर, ग्वालियर — 474008 (म.प्र.) फोन ने ...0751—2345559 4. क्षेत्रीय निदेशक,ग्रेंशक,ग्रांवा विश्वविद्यालय परिसर आई.एम.एस. भवन, खण्डवा रोड, इन्दौर — 452001 (म.प्र) फोन ने ...0731—2465689 3. क्षेत्रीय निदेशक, न्यू कलैक्टेट रोड.सत्यम रेजीडेंसी टॉवर के पास, प्राइम डॉस्पिटल वाली गली, कैलाश नगर, ग्वालियर — 474008 (म.प्र.) फोन ने ...0751—2345559 4. क्षेत्रीय निदेशक,ग्रेंशक,ग्रांवा ज्वेककरेट रोड.सत्यम रेजीडेंसी टॉवर के पास, प्राइम 9893151661,9893523754 8. क्षेत्रीय निदेशक, शासकीय सवाशिव माघवराव गोलवलकर महाविद्यालय परिसर, सिविल लाईन,शवा — 488001 (म.प्र.) फोन ने ...07662—297210, 9425361851 6. क्षेत्रीय निदेशक, राजा भोज परिसर पॉलिटेलिक कालेज के आगे नीभी रोड बदखर जिला सत्तना — 485005 (म.प्र.) फोन ने ...0772—29140 7. क्षेत्रीय निदेशक, विश्वविद्यालय वचाटर क्रमांक — 6, रवर्ण जवन्ती डॉल के पीछे नेपाल पैलेस, सागरू – 470001 (म.प्र) भोन ने ...07582—264130 8. क्षेत्रीय निदेशक, विशाला विकास खण्ड "स" – मवन प्रथम तल, क्षेत्रीय परिवहन कार्यालय परिसर भरतपूरी, उपजेने – 456001 (म.प्र) भोन ने ...0734—2526993 8. क्षेत्रीय निदेशक, शासकीय स्मातकोत्य रक्षासी महाविद्याल,प्रिंदवाडा—480001 (म.प्र) भोन ने ...0734–254096 11. उपक्षेत्रीय निदेशक, शासकीय स्नातकोत्तर प्रवाली महाविद्याल, प्रियंता की महाविद्याल, रहादी फोना नं ...0734–2526993 8. क्षेत्रीय निदेशक शासकीय स्मातकोत्य हवाविद्याल, महाविद्याल, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्याल, महाविद्याल, स्वित्रीय निदेशक, शासकीय स्मातकोत्य महाविद्यालय,बडवा महिदाल, शासकीय खात्र के त्यासकीय स्वात्य कार्र महाविद्यालय,बडवा मीना नायक शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,बडवानी (म.प्र.) – 451551 फोन नं –07290–222099, 8839489431 । अधिक जानकोरी के लिए बेबसाइट – www.mpbou.edu.in यहलरात्रिय

संपादकीय

यह अत्यंत गर्व का विषय है कि हम ''जिज्ञासा'' की स्मारिका का द्वितीय संस्करण १७वीं राष्ट्रीय कार्यशाला जिज्ञासा २०२३ में प्रस्तुत करने जा रहे हैं जिसका विषय है ''अंतरिक्ष में आत्मनिर्भर भारत''।

अपना बचपन तो सभी को याद होगा और माँ की लोरी---चंदा मामा दूर के भी। हमने दादी-नानी की कहानियों और परिकथाओं में यह भी जाना की चन्द्रमा सुंदर है, सौम्य है, शीतल है, वहां की एक चमकीली दुनिया है। परंतु जब स्कूल में विज्ञान की किताबें पढी, जिज्ञासा बड़ी तो अपने गुरूजनों से पता चला कि चन्द्रमा हमारी धरती का एक हिस्सा है, और अंतरिक्ष हमारा सबसे नजदीक पड़ोसी है। चन्द्रमा तक पहुंचने के प्रतिस्पर्धात्मक प्रयासों ने कई रहस्योदघाटन किए जैसे कि वहां का धरातल ऊबड़ खाबड़ है, वहां ना जल है ना ही जीवन, तापमान पृथ्वी से ज्यादा है, इत्यादि।

भारत भी अंतरिक्ष में सधे कदमो से आगे बढ़ चुका है। बड़ी सफलता है चन्द्रयान-३ की चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर शाफ्ट लैंड़िंग। यह अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भरता की भारत की उल्लेखनीय यात्रा है। यह भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO), सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (PSU), निजीफर्मो, स्टार्ट-अप और विभिन्न अन्य संस्थाओं के अग्रणी प्रयासों को उजागर करने वाली सफलता की कहानियों का एक व्यापक संकलन लाता है, जिन्होंने अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत की आत्मनिर्भर उपलब्धियों में योगदान दिया।

भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम तेजी से एक जीवंत, आत्मनिर्भर परिस्थिति की तंत्र में विकसित हो रहा है जिसमें अत्याधुनिक अनुसंधान, तकनीकी प्रगति और सभी की भागीदारी शामिल है। उनकी गतिशील भागीदारी ने न केवल भारत के अंतरिक्ष उद्योग के क्षितिज का विस्तार किया है, बल्कि इसके विकास और वैश्विक प्रति स्पर्धा को भी बढ़ावा दिया है।

जिज्ञासा कार्यशाला के विज्ञान लोकव्यापीकरण हेतु आयोजित की जाती है जिज्ञासा एक ऐसा मंच है जहां विज्ञान से जुड़े अनसुलझे और मन में उठ रहे तमाम सवालों का जबाव मिलता है। इस कार्यशाला में विद्यार्थियों के लिये विज्ञान के क्षेत्र में प्रतियोगिताएँ एवं अखिल भारतीय वैज्ञानिकों के व्याख्यान आयोजित किये जाते हैं। देश भर से आए वैज्ञानिक विद्यार्थियों के विज्ञान से संबंधित जिज्ञासा का समाधान करते हैं।

संपादकीय अमला उन सभी के प्रति अपना आभार व्यक्त करता है, जिन्होंने अपने संस्था के विपणन को इस स्मारिका का भाग बनाया। उन सभी के प्रति कृतज्ञता प्रेषित करते हैं। जिन्होंने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से स्मारिका के संकलन में अपना सहयोग दिया।

Mulle

डॉ. मुक्ता भटेले

MAHAKAUSHAL VIGYAN PARISHAD

A UNIT OF VIGYAN BHARAT

Mahakaushal Vigyan Parishad is geographically situated in the Central part of Madhya Pradesh. It consist of five division - Jabalpur, Sagar, Rewa, Chhindwara & Shahdol. It was registered an 2006 and has an objective of spreading principals and role of Swadeshi Vigyan alongwith popularizing science both at grass root and research levels.

AIMS & OBJECTIVES

• To spread Bhartiya Heritage with a harmonious synthesis of physical and spiritual sciences that nourish and flourish together.

• To rejuvenate the Swadeshi Movement in this age of science and technology for the purpose of national reconstruction by spreading the awareness of unique contributions of ancient Bharat in the development of modern science.

• To approach educational authorities for the inclusion of the information about the scientific heritage in their curriculum and utilize the R&D personal and institutions towards development of indigenous technology and thereby to uphold the identity and dignity of Bhartiya Science in the comity of nations.

• To interface with the Government and other agencies for the development of appropriate policies on education, economics, science, engineering, technology, industry etc. and encourage them for consuming less energy and less capital but maximum labour with due eco-balance for meeting the rural needs in a decentralized method to the fullest extent possible.

• To organize science fairs and competitions for educating the masses at large, particularly the younger generation.

• To establish educational Institutions, training centres and research establishment for the development and propogation of various programmes.

• To coordinate with the activities of Vijana Bharati and organize seminars/workshops, expert lectures and various other activities.

• To work towards the development of a common script and scientific terminology for all Bhartiya Languages.

• To help and giving modern interpretation of various scientific achievements ancient and modern, by various means.

• To make villages self-reliant by imparting traditional and rural technologies.

• To conduct entrepreneurship development programmes at part with the governments schemes and all the theme industries with indigenous technologies.

महाकौशल विज्ञान परिषद् द्वारा आयोजित मुख्य कार्यक्रम

- National Youth Day (Birth Day of Swami Vivekanand) (12 January)
- Netaji Subhash Chandra Bose Birthday (23 January)
- National Science Day (28 February)
- World Water Day 22 March
- World Earth Day 22 April
- National Technology Day (11 May)
- World Telecommunication Day (17 May)
- International Biodiversity Day (22 May)
- World Environment Day (05 June)
- International Yoga Day (21 June)
- World Nature Conservation Day (28 July)
- International Youth Day 12 August
- Independence Day of India (15 August)
- Sadbhavna Diwas (20 August)
- Teachers' Day (Dr. Radhakrishnan's birthday) (05 September)
- Hindi Day (14 September)
- Engineer's Day in India (15 September)
- Birth Anniversary of Sir J.C. Bose (30 November)
- National Mathematics Day (22 December)
- International Bio-Diversity Day (29 December)

महाकौशल विज्ञान परिषद् की कार्यकारिणी



संरक्षक डॉ. वी.के. रैना



उपाध्यक्ष डॉ. भरत मिश्रा



कोषाध्यक्ष डॉ. मुक्ता भटेले

सचिव - डॉ. रवि चौरे सदस्य - डॉ. प्रशांत कुमार सेलेट सदस्य - डॉ. ऋषि कुमार तिवारी सदस्य - डॉ. शिखा सक्सेना



संरक्षक प्रो. रहस्यमणी मिश्रा



डॉ. निपुण सिलावट

सदस्य

डॉ. सुरेन्द्र सिंह

उपाध्यक्ष



सचिव इंजी. प्रभात दुबे



अध्यक्ष

डॉ. सुनीता शर्मा





सदस्य डॉ. मुकेश राय

Systematic Decimation of India's Strengths Through Science

While the British used science to subjugate India in every area — from agriculture, textile and metallurgy to its natural resources and self-esteem, Indian scientists re-infused the country with national pride and contributed to the freedom struggle.



The legendary astrophysicist Dr S Chandrasekhar (1910- 1995), a co-recipient of the 1983 Nobel Prize for Physics, was once asked: 'Why was there a sudden surge of modern scientists of interna- tional repute in the first three decades of 20th century in India?' He replied: 'There was a need for national self-

expression — to show the West that, in all realms including science, Indians were equals.'

The first three decades of the 20th century will forever remain an important chapter in India's history as that is when the ancient civilisation of Bharat asserted itself to eventually reclaim its rightful place on the inter- national stage. The citizens of Bharat became alive to their glorious iden- tity as inheritors of



an unparalleled civilisation. The process of awareness had become much earlier but found its firm footing in the 20th century, affecting men and women in all walks of life, all age groups, all professions, all classes, all ideologies.

Much has been written about the contributions made by political and social leaders of the country who forged a new path for Bharat to drive out the British in 1947. Truly, it would never be enough to sing their paeans as they not only won Swatantrata for Bharat but also inspired colonised nationalities across Asia and Africa to follow Bharat's example. Yet, it is unfortunate that in this saga of freedom struggle, our scientists have largely remained unsung, and almost unknown to the common Indians. Moreover, even though they fought against heavy odds and waged a battle as important as those of Indian political leaders, we as a society are yet to acknowledge and perceive scientists as warriors of the struggle for Swantantrata.

In fact, there is enough historical information about how 'science' was utilised as a potent tool to establish and consolidate exploitative Brit- ish rule in India; how the oppressive and discriminatory measures were exercised by colonial rulers against Indians in the scientific domain; and most importantly, there are inspirational accounts of the struggle as to how those repressive measures were challenged and how the counterattack emerged in an intelligent manner. Now, the time is ripe to make ear- nest efforts to explore the struggle that was carried out in the domain of science and awaken the people by telling hitherto untold stories of audacious scientific ventures that could create impulse in the hearts of fellow Indians to achieve Swantantrata.

USE OF SCIENCE FOR SUBJUGATION

Several essays and critiques of British rule — right from Indians to Britishers themselves, and even before Bharat's Swatantrata — have established that the 'higher' aim of the British rule was to obliterate Indian identity and replace that with British ideas and ideals. This was an attack on the very identity, i.e., 'swa' of the nation. The most effective tool to achieve this 'higher' goal, obviously, was 'science'. Renowned scholar Ashish Nandy has exposed the foul play of colonisers based on 'science'. He writes, 'The reader may remember popular anecdotes about colonial adventurers, or scientifically-minded explorers who sometimes scared off or impressed the natives of Asia and Africa with new forms of black magic based on the discoveries of modern science. The civilizing mission of colonialism thrived on this folklore of encounter between western science and savage superstitions. But in each such instance, it was science that was put to the use of the colonial state; the state was not put to the use of science.' It was a serious attempt of British rulers to conquer the 'swa' of India by using 'science'. This was a life threatening attack. Indians were shaken to **It has been estimated today that Britain stole around \$45 trillion from India during its rule of 190 years** the core. It was an existential crisis, indeed, and all geared up to take on this unprecedented challenge.

Science was used to subjugate India in an all encompassing manner. Even before the East India Company's political hegemony was firmly established, the company had set up the Survey of India in 1767 to explore and map the rich natural resources of Bharatvarsha in a scientific manner. Thus was set in motion the systematic exploitative annihilation of India's agriculture, mineral wealth and village industries, and the need to construct the Railways to be able to transport the country's wealth from inland to port cities and thence to Britain of special note is the heart-rending tale of how the country that supplied food grains to the world since ancient times, was reduced to a state of famine, occurring successively since the late 18th century right up to 1943. It is shocking that these were man made famines. The food shortage for Indians was created by the mindless policies of the British. The farmers were forced to give up cultivation of cereals for cash crops such as indigo, cotton, tea, coffee, jute, as these powered Britain's global trade. The profits of this trade were used to strengthen the British economy and no benefits ever reached Indians in terms of revenue and food grains. In his 'Drain of Wealth' theory, Dadabhai Naoroji estimated that half of India's revenue and more than a third of its savings were drained to Britain.

Not a single aspect of life in Bharat was left untouched by the diabolical British rule. Its administrators declared Indians to be an inferior race, with no knowledge of science whatsoever, no tradition of higher learning and even no capacity to learn anything 'modern', which they interpreted as 'western'. In one fell swoop, centuries of India's achievements in science from metallurgy to mathematics, from agriculture to Ayurveda and astronomy were belittled, disregarded and dishonoured fundamentally and so powerfully that many Indians started believing in their own inferiority. Science was thus administered for the first time to plunder India's wealth. It has been estimated today that Britain stole around \$45 trillion from In- dia during its rule of 190 years.

To add insult to injury, the British blatantly and shamelessly stole some of the finest specimens of our heritage that can now be found in their museums.

SCIENCE FOR SWATANTRATA

It was the domain of science from where the conch was blown to challenge the British intellectual hegemony. Dr Mahendralal Sircar, a successful medical practitioner having experienced the bitter hegemonic attitude of the adherents of west- ern science, rose against injustice and pledged to establish a Swadeshi scientific institution. With the help of munificent fellow Indians, he established an Indian Association for the Cultivation of Science (IACS) in 1876, which was 'solely native and purely national'. He had a conviction that 'science' is the instrument for national reconstruction and en- visioned a glorious India through indigenously developed science.

Along with Dr Sircar, Acharya JC Bose and Acharya PC Ray, the leading lights of Indian science initiated a vigorous and creative struggle in the domain of science to achieve Swatantrata. Many others followed them. It is extremely difficult to estimate their awesome contributions. The sheer immensity of their offerings suggests that by all means, they will be remembered as the epoch- makers in Swatantra Bharat, as they laid the foundation for the development and progress of science to be utilised for the national resurrection and reconstruction.

In the 75th year of Swatantrata, paying tributes to these science warriors will be truly meaningful if we could imbibe their spirit and under- stand their dream about Swatantra Bharat, and take the pledge to make ourselves worthy to walk that spirit and strive hard to realise their dream. I would also like to take this opportunity to extend best wishes to all the readers of Science India on the festival of Ganesh Chaturthi, which itself has its roots in India's struggle to assert its 'swa'. As we all know, it was started by Lokmanya Bal Gangadhar Tilak in 1893 in the public domain, to create a platform from where nationalist ideas could be preached and spread to the masses.

* The writer is Chief Editorial Advisor, Science India

WORKSHOP ON MADHYA PRADESH SCIENCE TECHNOLOGY **& INNOVATION POLICY**

As India and the world reorient in the wake of the COVID-19 crisis, a landmark policy initiative has been flagged by the Government of India and in that context a workshop on Madhya Pradesh Science Technology and Innovation policy was conducted at Hotel Kalchuri, Jabalpur (M.P.) on 29 June 2022. Eminent Guests to grace the occasion were Mr. B.B. Singh, Dr. Praveen Kondekar, Dr. M.L. Mahobia, Dr. Sunita Sharma and Dr. Nipul Silawat. No. of Participants to be benefited by this W/S were100 Science is a system of knowledge that is concerned with the physical and natural world and its phenomena and works to unveil general truths and the operations of fundamental natural laws. Technology is the systematic theoretical and practical knowledge and skill used in the process of production or service delivery. Technology is not a finished product or service. Technology includes the entrepreneurial expertise and professional know-how needed to deliver products and services. Innovation is the process of using knowledge and technology to develop, improve, or improve the production or performance, of products, services and processes that have value in terms of commercial impact or social benefit.

अनुसंधान, नवाचार, विज्ञान के सरलीकरण और महत्व पर दिया जोर मप्र विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार नीति-2022 पर परामर्श एवं सुझाव कार्यशाला

जबलपर। हाल के वर्षों में विज्ञान प्रौद्योगिकी और नवाचार विकास के क्षेत्र में मध्यप्रदेश की प्रगति प्रभावशाली रही है। इस उपलब्धि को जारी रखने के लिये विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार नीति के मसौदे में कई प्रगतिशील प्रस्ताव शामिल किये जाने चाहिए। उक्त विचार मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिको परिषद, मैपकॉस्ट के प्रमुख वैज्ञानिक डॉ.आर.के. आर्य ने बुधवार को मंप्र विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाँचार नोति 2022 के लिए आयोजित परामर्श और सुझाव कार्यसाला की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किये। मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, अटल बिहारी इंस्टीटयुट



ऑफ गुड गवर्नेस एंड पॉलिसी एनालिसिस, रानी दर्गावती विश्वविद्यालय एवं मध्य प्रदेश स्टेट पॉलिसी एंड प्लानिंग कमीशन के संयुक्त तत्वावधान में होटल कल्चुरी में आयोजित कार्यशाला में विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारियों ने सहभागिता की। कार्यशाला में प्रो.पी.एन. कोंडेकर, मैपकास्ट वरिष्ठ वैज्ञानिक डी.के. सोनी

डायरेक्टर ट्रिपल आईटी डीएम ने विज्ञान में सेमीकंडक्टर, इसके साथ ही स्टार्टअप को विकसित करने पर सुझाव दिए। वक्ताओं ने साइबर सिक्योरिटी, क्लाइमेट चेंज, सोलर एनर्जी और ग्रीन टेक्नोलॉजी, नवाचारों पर उनके सुझाव प्रस्तुत किए। स्वागत भाषण

ने प्रस्तत किया। बायोडिजाइन इनोवेशन सेंटर प्रमुख प्रो. एस.एस. संध्, पो. एसपी गौतम ने भी विचार रखे। महाकौशल विज्ञान परिषद् अध्यक्ष प्रो. सुनीता शमां ने विज्ञान के सरलीकरण व सबकी पहुँच में विज्ञान की संकल्पना पर जोर दिया। इस दौरान सरदार पटेल विवि बालाघाट के कलपति विप्लव पॉल, मैपकास्ट एज्यू. डॉयरेक्टर टी. हबीब सहित प्रदेश के विभिन्न स्थानों से आए शिक्षाविद और वैज्ञानिक विशेष रूप से मौजूद रहे। संचालन मैपकास्ट प्रधान वैज्ञानिक निपुण सिलावट व आभार एमपीसीएसटी सेल समन्वयक पो. सरेन्द्र सिंह ने व्यक्त किया।

अनुसंधान, नवाचार, विज्ञान के सरलीकरण पर जो

मप्र विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार नीति पर वर्कशॉप

जबलपुर। हाल के वर्षों में विज्ञान प्रौद्योगिको और नवाचार विकास के क्षेत्र में मध्यप्रदेश की प्रगति प्रभावशाली रही है। इस उपलब्धि को जारी रखने के लिये विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार नीति के मसौदे में कई प्रगतिशील प्रस्ताव शामिल किये जाने चाहिए, जो वैज्ञानिक अनुसंधान समुदाय के साथ-साथ सामान्य जनों द्वारा विज्ञान को समझने एवं दैनिक जीवन में इसे लागू करने के तरीकों में एक बडा बदलाव ला सकते हैं। ये विचार मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, मैपकॉस्ट के प्रमुख वैज्ञानिक खॅ.आर.के. आर्य ने बुधवार को मंग्र विज्ञान, प्रौद्योगिकी और



नवाचार नीति 2022 के लिए आयोजित परामर्श और सझाव कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किये।

महत्वपूर्ण विषयों पर प्रस्तुत किये सझाव- कार्यशाला में प्रो.पी.एन. कोंडेकर. डायरेक्टर टिपल आइंटी डीएम ने विज्ञान में सेमीकंडक्टर, इसके साथ ही स्टार्टअप को विकसित करने पर सुझाव दिए। संयुक्त रूप से अधितिगणों ने साइबर सिक्योरिटी

क्लाइमेट चेंज, सोलर एनर्जी और ग्रीन टेक्नोलॉजी, नवाचारों पर उनके सुझाव प्रस्तत किये। कार्यशाला में स्टार्टअप पर भी सुझाव दिए गए जिससे प्रदेश को आत्मनिर्भर वनाया जा सके।

वैज्ञानिक नवाचारों पर जोर -कार्यशाला में स्वागत भाषण मैपकास्ट वरिष्ठ वैज्ञानिक डी.के. सोनी ने प्रस्तुत किया। रादविवि बायोडिजाईन इनोवेशन सेंटर प्रमख

प्रो. एस.एस. संधु, प्रो. एसपी गौतम एवं धन्यवाद ज्ञापन करते हुए एमपीसीएसटी सेल समन्वयक व रादुविवि जीव विज्ञान संकायाध्यक्ष प्रो. सुरेन्द्र सिंह ने कहा कि मप्र को ऐसे वैज्ञानिक नवाचारों और तकनीक की आवश्यकता है, जो प्रभावी समाधान तथा सकारात्मक बदलाव का मार्ग प्रशस्त कर सके। इस अवसर पर प्रदेश के विभिन्न स्थानों से आये शिक्षाविद् एवं वैज्ञानिक मौजुद रहे।

आचार्य प्रफुल्ल चंद्र राय जयंती कार्यक्रम

In a world engulfed by the COVID-19 pandemic, when the leaders of several countries have called for national self-sufficiency. I am prodded to reflect upon the immortal philosophy and works of Shri Acharva Sir Prafulla Chandra Rav [P.C Rav]. Anointed the father of chemistry in India. Prafulla Chandra Ray was a strong advocate of making India industrially self sufficient a cause to which he dedicated his entire life. P.C Ray was born on August 02, 1864 to a Zamindari family, in the village of Raruli Kathpara, in the then Jessore district, which was a part of the Bengal Presidency of British India (current day Bangladesh).

His work was fuelled and guided by an **inherently nationalistic spirit**. He realized that for India to break the shackles of the overbearing colonial rule, the country needed to build a strong and independent scientific research base something that was sorely lacking. This research base would then be the foundation on which the country could augment industrialization and thus ensure selfdependence and self-sustenance.



गामोटय विवि में आचार्य प्रफुल्ल चंद्र रे की जयंती पर व्याख्यान आयोजित

चित्रमुट (रातना) (पईटुनिया) प्रतिनिधि)। विज्ञान एतं पर्यावरण रात्वराय, महारमा गांधी विजनुष्ट प्रामीवय विरवविद्यालय में बुधवार को उजववी प्रपुल्ल चंद्र रेजवंती कार्यक्रम विज्ञान भारती बद्ध र जवता व्यवसाय विद्वार मारत 1ल, विक्षन परिषत एवं मसात्मा तबबूट ग्रामोवय विद्वविद्यालय के n if ur सपुक्त तत्वायधान में आवोतित किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता प्रोपेत्रस केरस तिकरी वालिगडन एवं विशिष्ट अतिवि के एप में प्रोपेत्रस प्रवीप मिक्षा एवं प्रोपेत्रस प्रवाध प्रोत्पत्र

एन पटेलरहे। करपंज्रस का प्ररम्भ तीप प्रजनातन, वती बंहना व प्रोपेन्सर रे के खित पर गर्पण द्वारा किया गया। कार्यज्रस में गविद्यालय के कुल्पानि प्रोपेज्रस भरत मेश्वा क्य मार्गवर्धक उद्योधन हुआ् । प्रोपेस्सर मेश्वा ने चलाचा कि अवच्याचे पीसी रे का मुराव वेगवन भारत को औषधियों व रसायन के नेमांण में उनामनिर्भर तनाने कि वाँद से केमिकल और फार्मास्विटिकल जमिटेड की स्थापना की उर्देर उझेकों सायन एवं औषधियों का निर्माण प्रारंभ रूपा एवं उनका वसरा भागीरधी योगवान

आंग्रेस के आ



सामी दय विश्वविद्यालय में आजार्य प्रफुल्ल बंड रे जयती पर व्याख्यान देते व्याख्याता । ® सीजन्य : आयोजक म्मुटिनी' में राष्ट्रवा को आवडाता (सामय म्मुटिनी' में राष्ट्रवा को आमिट ठाप अबन भी मिलती है ने अककम अविवाहित रहकर अबना संपूर्ण धन अकने छात्रों एवं समाज के विकास मेंलगाया। विदेश के अमेकों संस

सम देवा वसवा वासत म आवाय प्रयुत्त कर उसने वेश के लिगत पांच इतर वयों में हुए स्वापन विज्ञान के कार्यों को रोकवर इतिन् कैसेस्ट्री नामक पुरतक के वो वैन्यूम में प्रस्वाजन किया द्वा उसर प्राचीन सापन उसर के इन कर उजलेने महत उपले प्रतिक से लेखांकिंग किया। संदेप में स्वायन के प्रायायक सोने के साप-साथ वेश के विकास मलगाया। घटुन घडु सामाजिक कार्यकान के प्रोकेसर रे: शासकीव महाविद्यालय सरला से पधारे प्रोपेसर प्ररोप मिश्रा ने अपने स्वतंत्रता अवंतोलन में असूतपूर्व योगवान रक्षा। मुख्य अतिथि के रूप में प्रोपेसर केएस उद्वीधन में चलाया की रसायन शास्त्री सोने के साध-साथ ग्रोपेसर बहुत बड़े सामाजिक तिवारी में बताया की उनचार्य प्रयुक्तन चंद्र रे जार्यजलां ये वर्ष 1920 जी यंगाल जी बाह एक यक्षन रसायनज्ञ के साथ साथ राष्ट्र वाव भी थे। 1920 में उन्होंने इंडिंग्यन साइंस में बाह पीड़ितों के लिए की के झरा तीन लाख वयये एकव किए एवं बाढ़ पीड़ितों की उम्भूतपूर्व मतव की इसी को लेकर महात्मा यात के रूप में कार्य किय गतं 1024 में सीम्पन केफिकल सोसाइटी गांधी ने उजपानी जा, उजपा फलत की जपायि भी स्थापना भी। ये जिन्दुसंस्कृति के पुरोधा थे उनभी पुरत्क ''विषयेर एवं उनपटर उनकी विद्रत का भी किया जा सकता है कि उनको देश

रेने औषधिव रसायन के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दियाः मिश्रा आचार्य प्रफूल चंद्र का मनाया जन्मदिन

मप्र के प्रथम मुख्यमंत्री पं. रविशंकर शुक्ला भी किये गए याद

feration जबलपुर। महित महाविद्यालय में महाकौशल विज्ञान परिषद के संयुक्त तत्वाधान में क्रॉतिकारी भारतीय वैज्ञानिक आचार्य प्रमुझ चंद्र राय का जम्मदिन मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अध्यक्ष महाकौजल विज्ञन परिषद हाँ, सुनीता शर्मा, आचार्य शासकीय आदल व्यानों द्वारा फेलोजिय । विज्ञान माहबिद्धालय विशिष्ट अतिथि प्रमुख श क अनुवर सरयाना द्वारा पराग्रात्व र क उपाधियां प्रवान को गई। के वैज्ञनिक जॉ. निपुष सिलायर, क्षेत्रीय **फाउर आफ इंडियन केम्प्रेर्ट्रा क**ा संचालक मग्र विज्ञन एवं प्रीग्रीगिकी परिषद

प्रिवर आगः ३००ग वर्गाता गांधवा एवं हीवींकर प्रभव दूर्व प्रवित्र पर्यात्रण संबध के अधिका प्रवित्र प्रवित्र स्वाकेशन विज्ञान परिषट रहे। कार्यनी शिस्टाने ने अधिका प्रवेशम म्याकोलन विज्ञान परिषट रहे। कार्यक्रम क्रांगण है कि से प्रवेशमर 2 की लिम की अध्यक्षत प्रायवे जी, क्लिंग पडि ने बीभाग है कि से प्रवेशमर 2 की लिम की आग प्रायता प्रायतां की अनुवाधी ? वंशावली में उनाता हूं। उन्होंने चताया लि की। इस अवसर पर खत्राओं को आचार्य रे प्रोपेस्सर रे अत्यन्तरसवणी पूर्ण जीवन केस्साः के आविषकारों एवं शोध के बारे में विस्तार साध एक ज्यभट स्सापनड भीचे, इसी कारण से बडावा गया। बसाओं ने अपने बसच्य में ्यानी "प्रायः कर्डाइंग्लानेश्वार्यं कर्षाता संख्या गया। वकोका ने अगने बळ्या म कताजात हो। बरावेसा में प्रोपेश्वर आर सी.पिकटी, प्रो. एसके अनुवेधी, जा के लिए मोर्प कर राह था, जा समय प्रसार गीला, जा.रॉक्ट मिल, डा.पीरंत आ यार्च प्रमुख बंद रे द्वारा विभिन्न अनिल अगुवाल व छात्रों ने अविष्कार कर धारतीयों को स्वरोजगार से



हने का प्रयास किया गया। जिसमें बंगाल वैज्ञानिक व गणितज्ञों के ज्ञोध एव अनुसंधान अधिष्कारों पर सन्नाओं का ध्यान फिनायल का नाम प्रमुख है। इसी प्रकार आवार्य दारा कालिकारियों को विष्ण्योरक आकर्षित किया, तथा उनके द्वारा लिखित सामग्री बनाने की अभी प्रशिक्षण दिया जाता शोध पत्रों पुस्तकों का अध्ययन करने को था। जिसके कारण हमारे क्रांतिकारी अंग्रेजों बात कही इस अवसर पर स्वरोजगार केंद्र से लोहा ले पए। सभी बकाओं ने भारतीय में वैज्ञानिक तकनीको एवं रसायनिक



वीडियो में में बनय ज रहे उत्पारों को भी

कार्यक्रम में पं. रविजंकर शुक्ल प्रथम मुख्यमंत्री जिनका जन्म दिवस है, को भी याद किया गया और हितकडरिणी सभा दारा संचालित विद्यालय में उनके द्वरा किए गए अध्यापन कार्य के बारे में छात्राओं से चर्चा को गई प्राध्यापकों ने कहा कि हमे गर्व है कि हम उस संस्था में काम करते हैं जिसमें मंग्र के प्रथम मुख्यमंत्री ने भी कार्य किया। पं. रविशंकर शुक्ल ने सन 1901 में 25 प्रति माह वेतन में हितकारिणी स्कूल में अध्यापन का कार्य किया था।











स्वतंत्र प्रयाग

कार्यालय संवाददाता

आचार्य प्रफुल चन्द्र रे जंयती समारोह आयोजित

ग्रामोदय विश्वविद्यालय में यूजी, पीजी, डिप्लोमा पाढयक्रमों में प्रवेश हेतु ऑनलाइन आवेदन करने की तिथि 31अगस्त तक बढ़ी

चित्रकूट । महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विषयविद्यालय द्वारा संचालित रेपुलर माध्यम के पादृश्वक्रमों में सत्र 2022 - 23 में प्रवेश हेतु आवेदन की तिथि को 31 अगस्त 2022 तक बढ़ा दिया गया है। इस आशय की जानकारी देते हुए अध्यक्ष प्रवेश समिति प्रो हरि शंकर कुशवाहा व सचिव प्रवेश समिति डॉ कुसुम सिंह ने बताया कि यूजी, पीजी, डिप्लोमा , पीजी डिप्लोमा व एडवांस डिप्लोमा पाठयक्रमों में प्रवेश हेतु ऑन लाइन आवेदन के उपरांत पहले आओ पहले पाओ सिद्धान्त पर शैक्षणिक अभिलेखों के सत्यापन के बाद बगैर किसी परीक्षा के प्रवेश पा सकते हैं।

समस्त प्राध्यापक एवं वात्र/वात्राओं ने अपनी सहभागिता की। कार्यक्रम का प्रारम्भ दीप प्रज्जवलन, सरस्वती वंदना व प्रोफेसर रे के चित्र पर माल्यापंण चित्रकृट। आचार्य प्रफुल चन्द्र रे जंयती समारोह ,मंगलवार को हारा किया गया। उनकी विद्वता का विज्ञान भारती महाकौशल विज्ञान आकलन इससे भी किया जा सकता परिषद एवं महात्मा गांधी चित्रकृट है कि उनको देश व विदेश के ग्रामोदय विश्वविद्यालय के संयक्त अनेकों संस्थानों द्वारा फेलोशिप व तत्वाधान में विज्ञान एवं पर्यावरण मानक उपाधियाँ प्रदान की गयी। संकाय में आयोजित की गयी। उक्त कार्यक्रम में विज्ञान एवं पर्यावरण आयोजन के मख्य वक्ता प्रोफेसर संकाय के अधिप्राता प्रोफेसर

के.एस.तिवारी वॉशिगटन एवं

विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रोफेसर

प्रदीप मिश्रा एवं प्रोफेसर आर.यन.पटेल रहे, साथ ही संकाय

> आई.पी.त्रिपाठी ने बतावा की यह एस.के.चतुवेदीं, डा मेरा सौभाग्य है को मै प्रोफेसर रे के एस.एस.गौतम, डा. रवीन्द्र सिह, वंशावली में आता हूँ । उन्होंने बताया कि प्रोफेसर रे अत्यन्त डा. वीरेन्द्र उपाध्याय, डा. अनिल अगुवाल, डा. साधना चौरसिया, सादगी पूर्ण जीवन के साथ साथ एवं पूर्व छात्र तथा स्नातक एवं एक उदघट रसायनज भी थे इसी परारनातक के छात्र/छात्राओं ने कारण से उनको फादर आफ भागीदारी की। कार्यक्रम का इंडिण्यन कमेस्ट्री भी कहा जाता है। सचांलन प्रो. घनश्याम गुप्ता एवं कार्यक्रम में संकाय के प्राध्यापकों आभार प्रदर्शन डा. एस.एस.गीतम जैसे प्रोफेसर आर.सी.त्रिपाठी, प्रो. द्वारा किया गया।

महाकौशल विज्ञान परिषद, सी एम राइस स्कूल गढ़ा तथा मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की परिषद के संयुक्त तत्वाधान में किया गया। इस अवसर पर स्कूल के विद्यार्थियों ने आचार्य प्रफुल्ल चंद्र राय के जीवन परिचय पर भाषण दिया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. मुकेश रॉय, प्राध्यापक IIITDM, ने कहा कि आचार्य प्रफुल्ल चंद्र राय जिनका जन्म १८६१ में हुआ था, गुलाम भारत में विपरीत परिस्थिति में रसायन विज्ञान के क्षेत्र में उनका योगदान अतलनीय है. वो भारत के महान रसायन वैज्ञानिक, अच्छे शिक्षक, देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत, भारत में औद्योगिक क्रांति के सूत्रधार एवं भविष्यवक्ता थे। विशिष्ट अतिथि डॉ. सुनीता शर्मा ने बताया कि आचार्य प्रफुल्ल चंद्र राय ने भारत में रसायन विज्ञान के समृद्ध इतिहास को विश्व के सामने लाने के लिए द हिस्ट्री ऑफ हिंदुके मिस्ट्री''नाम की प्रसिद्ध पुस्तक लिखी। कोलकाता के प्रेसीडेंसी कॉलेज में कार्य करते हुए उन्होंने अपनी बचत के पैसों में ८०० की छोटी सी पुंजी से कोलकाता में बेंगॉल केमिकल एंड फार्मास्युटिकल की स्थापना की जो आज भी कार्य कर रही है, साथ ही बंगाल पॉटरी, टेनरी एवं अन्य कई उद्योग प्रारंभ किए। विद्यार्थियों को विज्ञान में आगे बढने के लिए प्रेरित किया, उनके विद्यार्थियों में प्रसिद्ध वैज्ञानिक मेघनाद सहा एवं डॉ. सत्येंद्र बोस प्रमुख हैं। डॉ. मुक्ता भटेले ने बतलाया कि आचार्य प्रफुल्ल चंद्र राय अपना पूरा जीवन देश में विज्ञान को आगे बढने के लिए समर्पित कर दिया, हमें भी उनसे प्रेरणा लेकर आगे आविष्कार करने की आवश्यकता है।

इस अवसर पर संस्था की प्राचार्य श्रीमती किरण राव ने विद्यार्थियों को संबोधित किया एवं अतिथियों का धन्यवाद दिया, श्री शैलेश पाठक संस्था के सभी शिक्षकगण एवं विद्यार्थी बडी संख्या में उपस्थित रहे।

NATIONAL TECHNOLOGY DAY

National Technology Day marks the anniversary of the Pokhran nuclear tests, conducted in 1998. The day also aims to recognise and honour the contribution of all scientists, engineers, and technologists.

National Technology Day marks the anniversary of the Pokhran nuclear tests, conducted in 1998. In 1999, the Prime Minister proposed to celebrate National Technology Day to honour those scientists, engineers, and technologists who contributed to the success of the Pokhran nuclear tests. Since then, the day has been celebrated annually on May 11.

Former president Dr APJ Abdul Kalam, known as the 'Missile Man of India', played an instrumental role in the Pokhran nuclear tests.

The theme for this year's National Technology Day is "School to Startups- Igniting Young Minds to Innovate". The programs and celebrations for the 2023 National Technology Day will have a special focus on the Atal Innovation Mission, a government initiative to promote "a culture of innovation and entrepreneurship across the length and breadth of our country".

The programme was organised in Govt. Kalaniketan Polytechnic College, Jabalpur (M.P.) where eminent Guests were Director, TFRI and VC, JNKVV.



राष्ट्रीय अभियंता दिवस विश्वेश्वरैया जयंती

देश के विकास में इंजीनियरों की अहम भूमिका होती है। हर साल भारत में 15 सितंबर के दिन इंजीनियर्स डे (अभियंता दिवस) मनाया जाता है। गणित और विज्ञान के सिद्धांतो के साथ अभियंताओ ने कई नवीन कार्य किये है जिससे हम विकास के पथ पर अग्रसर हुए है। हमारे भारतीय इंजीनियर और भारत रत्न सर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया को उनके जन्मदिवस पर श्रद्धांजलि देने के लिए भारत में 15 सितंबर को राष्ट्रीय इंजीनियर दिवस मनाया जाता है।

इस यह कार्यक्रम महाकौशल प्रांत के कई स्थानों में आयोजित हुआ जिनमें प्रमुखत : विज्ञान भवन रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर, विजयश्री समुह संस्थान जबलपुर, प्रिमियर आई.टी.आई. महाविद्यालय जबलपुर है। मुख्य अतिथि एवं वक्ताओ में रानीदुर्गावती विश्वविद्यालय के कुलपति डॉo कपिल देव मिश्र, जबलपुर इंजीनियरिंग कॉलेज से डॉ. राजीव चाँडक, डॉ. के.के. असाटी, डॉo सुनीता शर्मा आदि रहे।



PRESS CONFERENCE FOR VVM

०६ अक्टूबर २०२२ को विद्यार्थी विज्ञान मंथन परीक्षा के लिये एक प्रेस वार्ता का आयोजन किया गया जिसमें नगर के सभी प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडियाकर्मियों को आमंत्रित किया। इस प्रेस वार्ता में मुख्य रूप से वी वी एम के प्रदेश संयोजक डॉ. राकेश पाण्डेय भोपाल ने प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए परीक्षा के मुख्य बिंदुओं पर प्रकाश डाला। डॉ. मुक्ता भटेले, राज्य संयोजक ने वी वी एम से जुड़े महत्वपूर्ण विषय रखे। यह वार्ता होटल कल्चुरी, जबलपुर में आयोजित की गई। इसमें लगभग २५० प्रतिभागी थे। मुख्य रूप से सुनीता शर्मा, डॉ. सुरेन्द्र सिंह, इंजी. प्रभात दुबे, श्री अंकित राय जी, डॉ. मुकेश राय, डॉ. लता पाठक सम्मिलित हुए।



विद्यार्थी विज्ञान मंथन (राज्य स्तरीय कैम्प)

विद्यार्थी विज्ञान मंथन का राज्य स्तरीय कैम्प ६ जनवरी २०२३ को सत्य प्रकाश पब्लिक स्कूल, जबलपुर में संपन्न हुआ। जिसमें महकौशल प्रांत के विभिन्न जिलों से १२३ विद्यार्थी चयनित होकर आए थे। उक्त कैम्प में विद्यार्थियों ने प्रायोगिक एवं लिखित परीक्षायें दीं। परीक्षाओं के बाद समापन सत्र आयोजित हुआ, जिसमें विद्यार्थियों को NPCIL के मुख्य अभियंता इंजी. संजय कुमार गुमास्ता जी का व्याख्यान सुनने का अवसर मिला और उसी के साथ विद्यार्थियों को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान देकर पुरस्कृत किया गया।



'न्यूक्लियर एनर्जी समय की आवश्यकता है'

Nuclear power is the fifth largest source of electricity in India after coal, gas, hydroelectricity and wind power. As of November 2020, India has 22 nuclear reactors in operation in 8 nuclear power plants, with a total installed capacity of 7,380 MW. Nuclear power produced a total of 43 TWh in 2020–21



दिनांक 24.8.22 को न्यूक्लियर पावर कारपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड चुटका मध्यप्रदेश परमाणु विद्युत परियोजना द्वारा शासकीय विज्ञान महाविद्यालय जबलपुर एवं महाकौशल विज्ञान परिषद के सहयोग से आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत परमाणु ऊर्जा विभाग का ICONIC WEEK कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में सर्वप्रथम न्यूक्लियर एनर्जी हेतु जागरूकता रैली का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 250 विद्यार्थी, NPCIL के अधिकारीगण एवं महाविद्यालय के प्राध्यापक शामिल हुए कार्यक्रम में न्यूक्लियर एनर्जी की आवश्यकता एवं न्यूक्लियर पॉवर प्लांट की कार्यप्रणाली के बारे में विस्तृत जानकारी अधिकारीगणों द्वारा प्रदान की एवं बतलाया की न्यूक्लियर पावर कितना अधिक सुरक्षित है विद्यार्थियों को इस क्षेत्र में रोजगार के क्या-क्या अवसर हैं ये जानकारी भी प्रदान की कार्यक्रम के अंत में विद्यार्थियों खुले प्रश्नमंच का आयोजन किया एवं पुरुस्कार दिए गए प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया था जिसमें न्यूक्लियर पावर प्लांट का चलित मॉडल प्रदर्शित किया गया एवं पोस्टर प्रदर्शित किए गए कार्यक्रम में NPCIL के अधिकारीगण श्री एस. के. गुमास्ता, श्री के.सी. शर्मा उपस्थित रहे।

विज्ञान भारती स्थापना दिवस

विज्ञान भारती का स्थापना दिवस २१ अक्टूबर २०२२ को विज्ञान भवन, रानीदुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर में आयोजित किया गया। जिसमें १२० प्रतिभागियों ने उपस्थित रहकर विज्ञान के वक्तव्य का लाभ लिया। इस अवसर पर महाकौशल विज्ञान परिषद के संरक्षक डॉ० वी के रैना को सम्मानित किया गया एवं विज्ञान में अपने अविस्मरणीय कार्यों के लिए डॉ. अनिल बाजपेयी, डॉ. सुनील बाजेपयी, व्याख्याता रसायन शास्त्र, साइंस कॉलेज को सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय के कुलपति मुख्य अतिथि डॉ० कपिल देव मिश्र एवं विशिष्ट अतिथि श्री वेद प्रकाश जी रहे। कार्यक्रम में डॉ० सुरेन्द्र सिंह, डॉ० सुनीता मिश्रा, इंजी. प्रभात दुबे, डॉ. मुक्ता भटेले, डॉ. अजय मिश्रा, डॉ. मीनल दुबे, इंजी. महावीर त्रिपाठी, डॉ० निपुण सिलावट एवं डॉ. मुकेश राय उपस्थित रहे।



सनातन धर्म ग्रंथों में विश्व की उत्पत्ति, पालन एवं संहार

प्रो. संत प्रसाद गौतम पूर्व अध्यक्ष केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड भारत सरकार, नई दिल्ली

ब्रम्हाण्ड की उत्पत्ति आज भी उत्सुकता एवं जिज्ञासा का विषय है जीव की उत्पत्ति के लिए अनेकानेक विकास वाद के सिद्धांत प्रतिपादित किए गये हैं। जो तथ्यात्मक रूप से आंशिक सत्य है किन्तु पूर्ण सत्य नहीं। वही दूसरी ओर यदि वैदिक काल से सनातन धर्म ग्रंथों की वैज्ञानिक विवेचना की जावे तो हमें पूर्ण सतय प्राप्त हो सकता है किन्तु विडम्बना यह है कि समाज में उन धर्म ग्रंथों को केवल धर्म की व्याख्या करने वाला मान लिया गया है।

इसकी स्पष्टता के लिए कई धार्मिक ग्रंथों के उदाहरण भी लिए जा सकते हैं। जैसे श्रीमद्भागवत में विज्ञान की परिभाषा को निम्न रूप में प्रस्तुत किया गया है।

येतदेव हि विज्ञानं न तथैकेन येन् यत्।

स्थिति उत्पत्ति अप्पयान पश्येद भावानां त्रिगुणात्मनाम।।

अर्थात विज्ञान के आधार पर देखने पर संसार की उत्पत्ति स्थिति एवं विनाश प्रकृति

के तीन गुणों की क्रियाओं का परिणाम है। अतः इस विविधता में सभी को एक ही तत्व से उत्पन्न माना जाये। इससे स्पष्ट है कि समस्त संसार का कारण, कारक व करण एक है।

हिन्दी भाषी क्षेत्रों के समस्त हिन्दुओं के घर और मन में निवास करने वाली गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा सृजित श्रीमद् रामचरितमानस केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं है। बल्कि उसका आधार पूर्णतः ज्ञान को फैलाने वाला वैज्ञानिकता से परिपूर्ण है। यदि हम रामचरितमानस की चौपाई पर ध्यान दें तो स्थिति स्पष्ट हो जाती है।

अरथ धरम कामादिक चारी। कहब ज्ञान विज्ञान विचार।

अर्थात गोस्वामी तुलसीदास जी ने मानस सृजन में जीवन के चार आयामों अर्थ, धर्म, काम एवं मोक्ष को ज्ञान एवं विज्ञान का आधार लिया गया है। किन्तु समाज में केवल ज्ञान एवं स्थूल आध्यात्मिकता पर चर्चा की जाती है उसकी वैज्ञानिकता पर नहीं।

जैसे धर्म की वैज्ञानिकता परमाणु के अवयवों के गुण धर्मों से प्रारंभ होकर मनुष्य समाज, राष्ट्र और अंर्तराष्ट्रीय धर्म तक विस्तारित है। यदि परमाणु अवयवों के परमाणु में विन्यास से उनकी कार्य प्रणाली को देखा जावे तो स्थिति का भान होता है श्रीमद् रामचरित मानस की चौपाई स्पष्ट करती है,

आनन अनल अंबुपति जीहा। उत्पति पालन प्रलय समीहा।।

यहां परमाणु को मुख समान मानकर इसके विन्यास की बात रखी है। परमाणु के बाहर अग्नि के समान गण जिसे आधुनिक योग में इलेक्ट्रांन का नाम दिया गया, और जो सदैव ऊर्जा का वाहन, अग्नि का प्रतिरूप हैं तथाा परमाणु के अदर वाले भाग में इलेक्ट्रान के ऋणात्मक आवेश के विपरीत धनात्मक आवेश धारी प्रोटान है जैसे मुख में अंदर अग्नि के विपरीत गुणधारी जीभ है जो पानी धारण करती है और यह इलेक्ट्रान एवं प्रोटान उत्पत्ति, स्थिति, पालन एवं निर्वाण का कार्य करते हैं। इस सिद्धांत की पुष्टि के लिये श्रीमद् भागवत् के निम्न श्लोक का उदाहरण दिया जा सकता है।

स कालः परमाणुर्वे या भुग्डंते परमाणुताम । सो अविषेश भुग्यस्तु स कालः परमो महान् ।।

जो स्पष्ट करता है कि परमाणु के अंदर रहने वाला यह काल जिसे आधुनिक विज्ञान में इलेक्ट्रान कहते है। और जो समस्त परमाणुओं का भोग करता है या रसायनिक क्रिया करता है और इस प्रक्रिया को सदैव करता रहता है। वही इलेक्ट्रान / ऊर्जा का स्रोत / क्रिया कारक संसार में सबसे महान है। यह प्रक्रिया तो परमाणु से अणु बने, अणु से यौगिक बनने, यौगिक से शरीर बनने तथा शरीर से जीव बनने तक अनवरत चलती है इसे जीव का उद्भव कह सकते है। लेकिन यह प्रक्रिया यही समाप्त न हो कर जीव का जीवन बनाये रखने में अनवरत क्रियाशील रहती है और आधुनिक विज्ञान के अंतर्गत शरीर के अंदर होने वाली चयापंच की क्रिया में स्पष्टतः परिलक्षित होती है। मानस की निम्नांकित पक्ति इस प्रक्रिया को स्पष्ट करती है।



सोई जल अनल अनिल संधाता। होई जलद जग जीवन दाता ।।

अर्थात वही पानी सूर्य की रोशनी तथा वायु के संम्पर्क में आने पर बादल बन जाता है। और बादल बनकर अचर संसार एवं चर या प्राणीमात्र का जीवन चलाने में मदद करता है और जीव के शरीर के अंदर होने वाली चयापचय की क्रियाएं ऊर्जा उत्सर्जित करती है और यही ऊर्जा जीव का जीवन संचालित करती है अर्थात जिस ऊर्जा से जीव का उदभव हुआ है उसी से सचालित भी होता है। मानस की उंक्ति के अनुसार

उत्पति पालन प्रलय बहोरी बाल केलि सम विधि मति मोरी।

सुमित्रा जी कहती है कि ब्रम्हा के द्वारा शरीर सृजन, उस जीव का पालन एवं उसका संहार बच्चे के खेल के समान होता है जो कृमिक बिना प्रयास के चलता रहता है। उसी प्रकार शरीर विन्यास के समापन की प्रक्रिया को निम्न श्लोकों से समझा जा सकता है।

अव्यक्ता दव्यक्तयः सर्वोः प्रभवन्त्यहरागमें । रात्र्यागमे प्रलीयन्ते तत्रैवाव्यक्त सज्ज्ञके ।।

सम्पूर्ण चराचर भूतगण ब्रम्हा के दिन के प्रवेश काल से अर्थात ब्रम्हा के सूक्ष्म शरीर से या प्रातः प्राप्त ऊर्जा प्रवाह से पदार्थ बनकर उत्पन्न होते हैं और ब्रम्हा की रात्रि की प्रवेश काल में। अर्थात् शरीर में ऊर्जा प्रवाह समाप्त होने पर अव्यक्त नामक ब्रम्हा के सूक्ष्म शरीर में ही अर्थात ऊर्जा में ही लीन हो जाते है।

भूतग्रामः स एवायं भूत्वा भूत्वा प्रलीयते। रात्र्या गमेऽवशः पार्थ प्रभवत्यहरागमें।। परस्तु स्मात्र भावोऽन्योऽव्यक्तो ऽव्यक्तता सनातनः। यःस सर्वेशु भूतेषु नश्यत्सु न विनश्यति।।

यह भूत समुदाय उत्पन्न होकर प्रकृति के वश में हुआ रात्रि काल के प्रवेश काल में अर्थात् शरीर समुचित सतत् ऊर्जा प्रवाह के समाप्त होते ही लीन हो जाता है। और दिन प्रवेश काल में अर्थात् पर्याप्त ऊर्जा की उपलब्धता पर ऊर्जा पुनः शरीर संधारण करती है। व जीव उत्पन्न होते है। उस अव्यक्त से ही भी अति परे दूसरा विलक्षण जो सनातन अव्यक्त भाव है। वह परम् दिव्य पुरूष सब भूतों के नष्ट होने पर भी नष्ट नही होता है। अर्थात् ऊर्जा अविनाशी, सनातन धर्मा एवं संसार का कारण–करण है।

NATIONAL SCIENCE DAY

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 28 फरवरी को Sir CV Raman के जयंती के रूप में मनाया जाता है वे नोबल पुरूस्कार प्राप्त करने वाले पहले एशियन एवं भारतीय वैज्ञानिक थे।

विद्यार्थियों के बीच वैज्ञानिक जागरूकता विकसित करने के उद्देश्य से हर वर्ष की तरह इस वर्ष का विषय ग्लोबल साइंस फॉर ग्लोबल वेलवीन है। इस उपलक्ष्य में शासकीय विज्ञान महाविद्यालय एवं महाकौशल विज्ञान परिषद के संयुक्त तत्वावधान में पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । जिसमें लगभग 100 विद्यार्थियों ने भाग लिया।



जिज्ञासा २०२२ की मुख्य झलकियाँ 22 से 27 नवम्बर 2022



India, Empowered with Cutting-Edge Defence Technology, Safeguards Nation's Sovereignty and Security Interests

Dr S.K. Mishra, Former DG, DRDO & DS



India has made major strides in the defence technology sector by galvanising its domestic defence industry and investing largely in the research and development domain. The country has made significant progress, since independence, by developing latest technologies, state-of-the-art military products, signing of defence cooperation agreements and MoUs, jointly developing advanced systems and sharing technological knowhows with many nations. It has enabled India's global status as an economic powerhouse empowered with indigenous defence capability; especially in high technology areas. In keeping pace with rapid technological advancement, the Indian industry, both public and private have shown dedicated participation in the

defence sector. From design and development of new weapons to building cutting-edge military platforms such as aircrafts, ships, submarines, battle tanks and missile systems. The Defence industry of India, which is a strategically important sector, has been pushing for greater indigenisation of high-tech defence hardware in order to strengthen the Indian Armed Forces to enable them to meet any challenge to country's security. With the nation commemorating 75 years of India's Independence, one must proudly remember one of the oldest civilizations in the world, the Indian civilization's immense contribution to the field of science & technology since the ancient times. Rishis from the vedic age like Aryabhatt, Bhaskaracharya, Sushrut, Maharishi Bharadwaj, Varahamahir, Vishwamitra, Kanada and many more had put India at the forefront of all scientific developments and advancement. Later when modern laboratories were set up, notable Indian scientists like Ramanujan, C.V. Raman, Homi J. Bhabha, Vikram Sarabhai, APJ Abdul Kalam and various R&D establishments like ISRO, CSIR, DRDO continued strengthening the fundamentals of modern science and technology in various fields by making groundbreaking contributions.

The responsibility of developing India's defence technology is assigned to DRDO. The Defence Research & Development Organisation was established with a vision to make the Indian Armed Forces indomitable in the battlefield. The premier agency, with a network of more than 50 laboratories, has since inception empowered India with critical defence technologies and systems. Since Independence, India, inherited with defence equipment from colonial ruler Britain, focused primarily on developing its capability to indigenously manufacture weapons in order to nurture and expand its defence industrial base. India's defence industry saw increase of defence expenditure and tremendous equipment requirements since 1960s, which also witnessed major conflicts and war with neighbouring countries. DRDO, since then, have been at the forefront equipping Indian Armed Forces with internationally competitive systems and solutions.

The development of missile technology in India started in 1960s, though Indian warriors have used 'Astras' as missiles in various forms in the sub-continent, proofs of which can be drawn from epics such as Mahabharat and Ramayan. The modern day missiles have roots in Germany and since World War II, several other nations developed a variety of missile systems. In India, eminent scientist and former President of India, Dr. APJ Abdul Kalam was the brain behind the Integrated Guided Missile Development

Programme (IGMDP), which started in 1980s. It was conceived to enable India to attain self sufficiency in the field of missile technology. The missiles developed under the programme were: Prithvi, Agni, Trishul, Akash and Nag. The project gave India the capability to produce indigenous missiles in other key areas as well. Today, India is one of the few countries in the world to have indigenously developed missile systems including critical technologies.

In the 1990s, after the Gulf War, India aimed to equip the country with a cruise missile system. Dr. APJ Abdul Kalam and NV Mikhailov, Russia's first Deputy Defence Minister signed an Inter-Governmental Agreement (IGA) in Moscow on 12 Feb 1998, which paved the way for the Indian-Russian Joint Venture (JV) BRAHMOS missile, developed as a fusion of great scientific minds from India and Russia. India's DRDO and Russia's JSC MIC NPO Mashinostroyeniya (NPOM) joined hands in this synergistic military and technical cooperation which has significantly progressed from a buyer-seller framework to one involving joint research, design & development and production of advanced state-of-theart BRAHMOS missile system. Today, this successful Joint Venture between India and Russia is not just transfer of technology but mutual production & upgradation of technology so as to ensure that country becomes self-reliant in supersonic cruise missile capacity.

BRAHMOS is unique with its higher weapon effectiveness, reliability and multiplatform, multinission and multi-target capability. The supersonic cruise missile with a fine combination of speed, precision and power, has three times more velocity and nine times more kinetic energy than any existing subsonic cruise missiles. The multi-platform, multitarget cruise missile, carrying a conventional warhead weighing 200 to 300 kg, is capable of flying up to 290-km at a top speed of around Mach 3. The supersonic speed with maneuverable trajectory makes it invincible for interception by the enemy's air defence system. BRAHMOS, initially conceived and developed as an Anti-Ship Cruise Missile (ASCM) system, has evolved over the years and added many more variants - from sea-toland, sea-to-sea, land-to-land, land-to-sea, sub-sea-to-land, sub-sea to sea and air-to-land configurations. The universal missile can be fired either from static, mobile platforms (land & sea) or fighter aircraft, in solo or salvo mode. This multiplicity makes the weapon all the more versatile in taking on the enemy anywhere, anytime. In the existing and swiftly evolving geopolitical scenario of the 21st century, Indian Armed Forces need to modernise and deploy its advance military systems in the country's frontier positions in order to safeguard the nation from numerous internal and external security challenges. The BRAHMOS supersonic cruise missile has given the Indian Armed

Forces the much needed capability and punch to undertake deep surgical strikes in both land and sea, thus protecting its borders and annihilating enemy assets and installations. Indian Army, which became the first land force in the world to deploy the deadly BRAHMOS in 2007, has raised several regiments of the formidable weapon in different configurations the latest being the "near vertical dive" trait to strike down an enemy target from a 90-degree angle. Similarly, for many of the Navy's frontline surface ships, BRAHMOS has been deployed as a prime strike weapon. In its sub-sea launch configuration, the supersonic cruise missile is set to increase the Navy's underwater weapons delivery capability manifold by being armed in the future submarines. The Indian Air Force's (IAF) frontline fighter aircraft Sukhoi-30MKI, after being modified to carry 2.5 tonne missile integrated with half a ton launcher, has successfully demonstrated

BRAHMOS missile's firing capability. The successful induction of BRAHMOS in all the three services has made India the first and only country in the world to complete the "supersonic cruise missile triad".

BRAHMOS has also achieved historic milestones in the flagship "Make In India" programme by successfully indigenising major sub-systems such as booster, nose cap, canister, fuel management system and other major non-metallic airframe components taking the Indian contribution to more than seventy percent. All launcher systems for the weapon are also being manufactured domestically. 100% of ground support equipment for the weapon complex are also being made in India. BrahMos Aerospace also prides itself in possessing a full-fledged design centre, an Industrial Consortium for producing different sub-systems, a world-class integration and check-out facilities with stringent quality control.

These advanced and powerful capabilities of the BRAHMOS missile has augmented the strength of Indian Armed Forces and projected successful Joint Venture as a perfect role model to emulate the ambitious 'Make in India' programme. Armed with strong defence R&D base, India is determined to become a technology research and manufacturing leader with dedicated focus on self-reliance, by collaborating more with industry, private-public sector, research and educational institutes along with streamlining defence export of military hardwares. The Govt. of India has formulated policies to encourage and boost domestic manufacturing and export of defence equipment has already resulted in substantial growth of defence export from the country. Today, India's Armed Forces are well-equipped and are growing stronger with scientific and technical support of defence R&D establishments and defence industries. They are actively engaged in research, development, testing and production capabilities of armament technology. To add more wings to India's military modernisation, the 'Atmanirbhar Bharat' vision has opened many corridors for the government and the Indian industry to partner on this exciting journey.

IISF CURTAIN RAISER : 2022

द्वां भारतीय अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव दिनांक २१ से २४ जनवरी २०२३ को भारत सरकार के पृथ्वी मंत्रालय, ऊर्जा मंत्रालय, MPCST एवं म.प्र. शासन द्वारा किया गया। उस निमत्त म.प्र. में ४ कार्यक्रम प्रस्तावित हुए थे जिसमें १ कार्यक्रम जबलपुर में संपन्न हुआ। यह कार्यक्रम जबलपुर इंजीनियरिंग कॉलेज में आयोजित किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि मान. श्री अशोक रोहाणी (विधायक केंट) उपस्थित रहे।



विश्व पर्यावरण दिवस

पर्यावरण के मुद्दों के बारे में आम लोगों में जागरूकता फैलाने के लिए यह दिन उत्सव के रूप में . मनाया जाता है । इस अवसर पर महाकौशल विज्ञान परिषद सरदार पटेल विधि महाविद्यालय एवं म.प्र. विज्ञान एवं

प्रौद्योगिकी परिषद के संयुक्त तत्वाधान में विश्व पर्यावरण दिवस का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें श्री लोकेश कुमार सिन्हा (पुलिस अधीक्षक), डॉ. अभिषेक शुक्ला (डायरेक्टर JNKVV), डॉ. सुनीता शर्मा, इंजी. प्रभात दुबे आदि की उपस्थिति रही। इन्होंने पर्यावरण के समसमायिक विषयों पर वक्तव्य दिए एवं पौधा रोपण कर पर्यावरण को संरक्षित रखने संकल्प लिया।







विज्ञान परिषद के प्रांत संगठन मंत्री श्री अंकित राय जी एवं प्रांत अध्यक्ष डॉ सुनीता शर्मा एवं महाविद्यालय के सचिव ओम तिवारी अध्यापक युगांक खरे शोभा मिश्रा माधरी साकेत गौतम दास प्रशांत रजक आशीष कुमार पाठक रित् रजक मनीषा चौधरी रंजीता मालिया मोहित यादव आदि उपस्थित रहे।

अभिषेक शुक्ला डायरेक्टर इंस्ट्रक्टर समस्त छात्र छात्राओं का मार्गदर्शन करते हुए कहा कि पर्यावरण हमें केवल 1 दिन नहीं बल्कि 365 दिन मनाना है। उन्होंने कहा कि प्लास्टिक का कम से कम उपयोग करके हम अपनी प्रकृति को हरा भरा बना सकें। कार्यक्रम का संचालक डॉ प्रियंका दुबे ने किया। इसी क्रम में कार्यक्रम में महाकौशल

जे एन के वी वी जबलपुर के द्वारा पर्यावरण दिवस को एक त्यौहार की तरह मनाने की सलाह दी गई तथा पृथ्वी पर प्राकृतिक पर्यावरण की हर संभव रक्षा करने के लिए हमें जागरूक रहने की सलाह दी गई। इसी क्रम में महाविद्यालय के संचालक इंजीनियर प्रभात दुबे ने



करने की सलाह दी साथ ही हमें

एक पौधा लगाने का उद्देश्य बताया

इसी कडी में डॉक्टर अविनाश

कजेरा साइंटिस्ट पोलूशन कंट्रोल

बोर्ड जबलपुर के द्वारा हमें पर्यावरण

के प्रति सजग रहने एवं हमें अपने

वातावरण में सकारात्मकता फैलाने

के विभिन्न तरीके बताएं। तत्पश्चात

कार्यक्रम में उपस्थित डॉक्टर

उद्बोधन में हमें पर्यावरण के प्रति जागरूक रहने एवं हमें अपने स्वास्थ्य के लिए सजग रहने के कई महत्वपूर्ण तरीके बताएं एवं साइबर क्राइम से संबंधित हो रहे अपराधों के बारे में जानकारी प्रदान की इसी कडी में प्रथम वक्ता के तौर पर डॉ प्रियंका दुबे कृषि वैज्ञानिक ने पर्यावरण में प्लास्टिक का उपयोग न

📕 कृष्णकांतदुबे 9144018243 सरदार पटेल विधि महाविद्यालय जबलपुर मध्य प्रदेश काउंसिल

अटल प्रगति पत्रकार रांझी, जबलपुर

आफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी भोपाल, महाकौशल विज्ञान परिषद के संयुक्त तत्वाधान में विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में भाषण, पेंटिंग, ड्राइंग प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें लगभग 350 छात्र छात्राओं ने भाग लिया यह कार्यक्रम मध्य प्रदेश काउंसिल आफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी के महानिदेशक डॉक्टर अनिल कोठारी के निर्देशन में एवं प्रधान वैज्ञानिक डॉक्टर विकास शिंदे और डॉक्टर निपूर्ण सिलावट के सहयोग से आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर श्री लोकेश कुमार सिन्हा एसपी साइबर क्राइम जबलपुर जिन्होंने अपने

(28)

जिज्ञासा २०२३ की मुख्य झलकियाँ

03 से 07 अक्टूबर 2023

T 123



वसाय कार्यशाला ०३-०७ अक्टूबर २०२३

-07 अक्टूबर 2023

पर (म.प.)





03-07 अक्टूबर 2023

दिवः







अतस्थि में आत्मानभर व













सेतु अभियंत्रण की उत्कृष्ट संरचना ''रामसेतु''

-इं सुरेन्द्र सिंह पँवार



रामसेतु को कोई मिथकीय कल्पना मानता है, तो कोई पुरा आख्यान। हिन्दू पुराण परम्परा के अनुसार आज से लगभग साढ़े सत्रह हजार वर्ष पूर्व श्री राम और उनकी वानर सेना ने इसी मार्ग से पैदल समुद्र पार कर लंका पर विजय प्राप्त की थी। कर्मकांडियों का विश्वास है कि सेतु—तीर्थ पर रनान अंतःकरण को शुद्ध करता है तथा मोक्ष प्रदान करता है। परन्तु मेरे लिए तो यह सेतु अभियंत्रण की उत्कृष्ट संरचना है, एक वंडरफुल रियलिटी! अद्भुत!! यथार्थ!!!

रामसेतु की प्रारंभिक संकल्पना— भारत के दक्षिणी—पूर्वी तट पर स्थित रामेश्वरम और श्रीलंका के तलाई—मन्नार के मध्य 9.0865*N और 79.5685*E रामसेतु / राघवसेतु, समुद्री सतह से न्यूनतम 3 फुट एवं अधिकतम 300 फुट नीचे स्थित है। अमेरिकी अन्तरिक्ष अनुसंधान एजेंसी— नासा के उपग्रह 'जेमिनी—2' ने 1966 में इस लुप्त सेतु की प्रथम तस्वीरें पृथ्वी पर भेजी थी। नासा इस सेतु के पौराणिक या ऐतिहासिक महत्व से अनभिज्ञ था, अतः उसने इसका नाम "एडम्स ब्रिज" या "आदम पुल" रखा। इसरो (भारतीय अन्तरिक्ष अनुसन्धान संगठन) ने 26 अक्टूबर 2003 को इसके चित्रों को सार्वजनिक किया।

स्कन्द पुराण के अनुसार त्रेता–युग में जब भगवती सीता को राक्षसराज रावण हरण कर लंका ले गया। तब

समुद्री—मार्ग (एक सौ योजन) पार करनें के लिए भगवान राम और वानर सेना के समक्ष तीन विकल्प रहे—

- समुद्र को तैरकर पार करना, परन्तु यह आत्मघाती तरीका था, क्योंकि समुद्री—मार्ग पर लंका की सतत एवं मायावी चौकसी नियत थी।
- समुद्र को नौकाओं या जलयान से पर करना, किन्तु इतनी संख्या में नौकाओं की तत्काल व्यवस्था संभव नहीं थीं।



3. समुद्र—मार्ग पर पुल का निर्माण।

प्रभु श्री राम ने किष्किन्धा के राजा सुग्रीव एवं विभीषण (जिन्हें लंका का भावी उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था) से विचार—विमर्श किया और उनके सुझाव पर समुद्र का आवाहन किया। स्कन्द—पुराण और पद्म—पुराण के अनुसार समुद्र ने अपने ऊपर सेतु—निर्माण का विकल्प सुझाया था।

समुद्र पर सेतु निर्माण कैसे हो ? इसका समाधान स्वयं समुद्र ने दिया— ''भगवान! आपकी सेना में नल नाम का वानर मौजूद है, वह बड़े—बड़े शिल्पियों में श्रेष्ठ है। महाबली और गुणी नल साक्षात् विश्वकर्मा (आदि—अभियंता) का पुत्र है। वह अपने हाथ से कुछ भी काठ, तृण अथवा पत्थर मेरे ऊपर फेंकेगा, वह सब मैं पानी के ऊपर धारण करूंगा। वही आपके लिए सेतु हो जायेगा, उसी के द्वारा आप रावण पालित लंका में सेना सहित जाइये। "(वाल्मीकि रामायण / 6 / 22 / 45–46)। अभियंता नल को मिले इसी श्रेय के कारण कुछ तमिल ग्रंथों में इस सेतु की चर्चा 'नल—सेतु' के नाम से भी मिलती है। गोस्वामी तुलसीदासजी ने रामचरितमानस में नल के साथ नील को भी इस निर्माण में महत्त्व दिया है,

नाथ नील नल कपि द्वौ भाई। लरिकाई रिषी आशीष पाई॥ (मानस/सु/60/1)

सी. राजगोपालाचारी लिखते हैं कि 'नल, प्रथम सेतु अभियंता था–जिसने यह महान समुद्र सेतु सफलता पूर्वक निर्माण किया और जो आकाश में स्वातीपथ की तरह दिखाई देता है'।

सेतु निर्माण—प्रारम्भिक सर्वेक्षण— जब इंजीनियर नल को सेतु निर्माण का दायित्व सौंपा गया, तो उन्होंने इसे चुनौती क रूप में स्वीकार किया। उन्होंने समुद्र—विज्ञान विशेषज्ञ नील को अपना सहयोगी चुना। उन्होंने सेतु निर्माण के लिए वैकल्पिक स्थलों की खोज की। इस कार्य में उन्हें अनुभवी हनुमान जी का सहयोग मिला,वे समुद्री मार्ग से लंका होकर वापस लौदे थे,

Sand Corals	उन्हें इस मार्ग में आने वाली कठिनाइयों—असुविधाओं का ज्ञान था। धनुष कोटि से तलाई—मन्तार के मध्य समुद्र की लम्बाई एक सौ योजन (लगभग 30 किलोमीटर) थी। यहाँ समुद्र बहुत छिछला था। जगह—जगह व्दीप (पहाड़ के शिखर) उभरे थे। सर्वसम्मति से इसी संरेखन (Alingnment) पर सेतु—निर्माण की अंतिम सहमती बनी।
	निर्माण सामग्री — एक सौ योजन लम्बे व एक योजन चौड़े सेतु के निर्माण के लिए सामग्री जुटाना एक कठिन कार्य रहा, वह भी निकटवर्ती क्षेत्रों से, क्योंकि दूरस्थ स्थलों से निर्माण–सामग्री लाना
Calcareous Sand Stone	श्रम एवं समय का अपव्यय था। रामदल के सबसे वयोवृद्ध संदस्य जामवंत को रामेश्वरम एवं पम्बन में स्थित अनुपयोगी पर्वतों की जानकारी थी, जहां चूना और बालू की अनगढ़ चट्टानें थी। निकट तम दूरी पर कुछ जंगल भी थे, जिन्हें समतल कर भविष्य की आबादी के लिए कृषि कार्य हेतु भूमि
Loose Rock	उपलब्ध कराना प्रस्तावित थी। रामनाथपुरम डिस्ट्रिक्ट गजेटियर 1972 सुस्पष्ट लिखता है, 'यह सेतु बालू और पत्थरों से
Sand	बना है, विशेषतः चूने के पत्थरों (लाइमस्टोन) से। नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ ओसियन टेक्नोलॉजी द्वारा इस सेतु के कुछ स्थलों पर की गई बोरिंग बतलाती है कि सेतु के 6 मीटर के हिस्से में समुद्री रेत, कोरल्स (मूंगा), केल्केरियस सेंड स्टोन और पत्थर मिले। जिओलाजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के
Construction Stone	पूर्व निदेशक डॉ. बद्रीनारायण का मत है कि रामसेतु में जो पत्थर मिले हैं, वे समुद्री नहीं हैं। इन्हें किसी प्रयोजन से यहाँ डाला गया होगा, इन्हें कहीं बाहर से लाया गया होगा।
Stone	सेतु मूल की स्थापना– सेतु–निर्माण का कार्य निर्विघ्न सम्पन्न हो, अतः शुभ महूर्त में प्रभु श्रीराम ने अपने आराध्य महादेव जी को स्मरण किया तत्पश्चात भूमि और समुद्र पूजन कर 9 प्रस्तर

(शिलाखंड) स्थापित किये। देवीपुर के पास वे पत्थर आज भी पूजे जाते हैं, वे ही सेतू के मूल कहलाते हैं।

सेतु निर्माण प्राविधि— पानी के अन्दर निर्माण विशिष्ट विधा है, जिसकी तकनीकी सामान्य से पृथक होती है, विशेषकर समुद्री पानी के अन्दर। समुद्री पानी की सांद्रता पीने योग्य पानी से अधिक होती है। समुद्री पानी खारा होता है और उसमें कोई वस्तु आसानी से नहीं डूबती, यदि उसका आयतन अधिक हो। विशाल पेड़ प्रस्तर (शिला—खण्ड), तृण, काष्ठ इत्यादि ऐसी निर्माण—सामग्री रही, जिसका उपयोग सेतु—निर्माण में किया गया।

दूसरी विशेष तकनीक, जो निर्माण में लायी गई, वह थी। अघुलनशील ठोस सामग्री का पानी पर धम्म से क्षेपण (Dumped)। लगातार ऐसा करने से तह बननी प्रारंभ हो जाती है। यदि पानी में वहाब भी होता है तो फेंकी गई सामग्री अपना स्वाभाविक ढाल ग्रहण कर लेती है। चूंकि समुद्र में सेतु—संरचना एक अस्थायी निर्माण माना गया होगा, अतः किसी प्रकार क के स्थायी आधार (foundation) का प्रावधान आवश्यक नहीं समझा गया, बल्कि समुद्र के बीच उभरे शैल—शिखरों, द्वीपों (आइलैंड्स) को सेतु के आधार पर स्तम्भ (नींव) की भांति उपयोग किया गया।

सेतु का निर्माण— निर्माण में रामदल के सभी सदस्यों का सहयोग रहा। कहते हैं, राम दल में 18 पदम् वानर भालू रहे,

जिन्होंने बिना विश्राम किये सेतु निर्माण किया। इस कार्य में सहयोग देने के लिए विभिन्न देवताओं ने अन्य—अन्य रूप धारण कर सहयोग दिया। साल, अश्वकर्ण, धव, बाँस, कुटज, अर्जुन, ताल, तिलक, तिनिश, बेल, छितवन, कनेर, नारियल, बबूल, अनार, बहेड़ा, करीर, बकुल, नीम आम, अशोक के शाखायुक्त पेड़, शिलाखंड, काष्ठ—समूह और तृण जिसे जो मिला, लेकर दौड़ा चला आया। किंवदन्ती है कि जिन पत्थरों पर निर्माण प्रभारी नल अपने हाथों से "श्रीराम" लिख देते थे, वे पानी पर तैरने लगते थे। खैर जो भी हो, गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस में निर्माण कार्य के सम्बन्ध में लिखा है—





सैल बिसाल आनि कपि देहीं। कंदुक इव नल नील ते लेहीं। (मानस/उत्तर/1/1)

गुणवत्ता नियंत्रण— रामचरित मानस की एक अर्धाली है—**"बांधि सेतु अति सुदृढ़ बनावा,"** वहीं वाल्मीकि रामायण के युद्ध कांड के श्लोक 60, 62 और 64 अनुसार— सेतु बनाने में उच्च तकनीकी का प्रयोग किया गया। महाकाय महाबली वानर हाथी के समान बड़ी—बड़ी शिलाएं और पर्वतों को उखाड़कर यंत्रों (विभिन्न साधनों) द्वारा समुद्र तट पर ले आते थे, कुछ वानर सौ योजन लम्बा सूत पकड़े थे तो कोई नापने के लिए दण्ड पकड़े थे। अर्थात पुल का निर्माण सूत से सीध में हो रहा था।

समय प्रबंधन— किसी कार्य को समय से पूरा करना उसकी सफलता है। एक सौ योजन लम्बे और एक योजन चौड़े रामसेतु का निर्माण 5 दिन में हुआ, जिसकी दिन—प्रति—दिन की प्रगति "रामायण" (महर्षि वाल्मीकि) में यूँ दी गई है—

पहला दिन	—	14 योजन (युद्ध कांड—22 ⁄ 68)
दूसरा दिन	—	20 योजन (युद्ध कांड—22 / 69)
तीसरा दिन	—	21 योजन (युद्ध कांड—22 / 70)
चौथा दिन	—	22 योजन (युद्ध कांड—22 / 71)
पाँचवाँ दिन	_	23 योजन (युद्ध कांड—22 / 72)कुल—100 योजन

सेतुबंध से वनस्पति और जल–जीवों (Flora and Fauna) पर प्रभाव–

इस पुल के निर्माण में जलचरों का विशेष सहयोग रहा, क्योंकि उन्होंने निर्माण क्षेत्र में विस्थापन की पीड़ा को सहजता से स्वीकार किया। इस निर्माण कार्य से परंपरागत जीव एवं वनस्पति सम्पदा को कोई क्षति नहीं हुई, बल्कि पुल निर्माण से समुद्री जीवों को आश्रय मिला। आज लगभग 3600 तरह के समुद्री वनस्पति और 450 तरह के दुर्लभ समुद्री जीव इस सेतु के आस—पास रहते हैं। रामसेतु के कारण ही इस क्षेत्र में थोरियम और टिटेनियम के विशाल भंडार सुरक्षित हैं।

सेतु निर्माण के समय सुरक्षा एवंलोड़ परीक्षण— सेतु, जिस क्षेत्र में निर्माण किया गया, वहां मायावी शक्तियों का बोलबाला रहा। निशाचर निर्मित—सेतु को कोई क्षति ना पहुंचाए इसलिए उस पर सजग चौकसी रखी गई। जिसका दायित्व विभीषण को सौंपा गया। वे अपने सचिवों सहित गदा हाथ में लेकर समुद्र के दूसरे तट पर खड़े हो गए, जिससे शत्रु पक्षीय राक्षस यदि पुल तोड़ने के लिए आएं तो उन्हें दंडित किया जा सके। (वाल्मीकि रामायण / 6 / 80)। राम सेतु धनुषकोडी (तमिलनाडु का पूर्वी तट) से प्रारंभ होकर मन्नार द्वीप (श्रीलंका का पश्चिमी तट) पर समाप्त हुआ, एक सिरे से दूसरे सिरे तक (Link by link)। और, इस प्रकार राम दल के अधिकांश वानर पुल बांधते—बांधते ही समुद्र के उस पर पहुँच गए। पुल पूर्ण होने पर हनुमान के कंधे पर श्रीराम और अंगद के कंधे पर लक्ष्मण बैठकर आगे—आगे चले। दूसरे वानर, झुंड में, अगल—बगल होकर चलने लगे। कुछ जोशीले वानर समुद्र में कूद जाते और फिर थोड़ी दूर तैर कर पुल पर चलने लगते। धीरे—धीरे वानरों की सारी सेना, विज्ञ—शिल्पी नल के बनाए पुल से समुद्र के उस पार पहुँच गई।

सेतु निर्माण की सफलता— (लंका विजय) अजेय दुर्ग लंका की समुद्री सीमा पर सेतु निर्माण होने से राक्षसराज रावण एवं उनके अनुयायिओं के हौसले पस्त हो गये, जबकि राम दल का उत्साह द्विगुणित। अंततः युद्ध में प्रभु राम की विजय हुई। विभीषण का विधिवत राज्याभिषेक किया गया। **यह विशाल सेतु जलमग्न कैसे हुआ?**— जब प्रभु राम, भगवती सीता को लेकर अयोध्या प्रस्थान करने लगे, तब लंकाधिपति विभीषण ने उनसे अनुरोध किया, "भगवान इस सेतु के मार्ग से सभी बलाभिमानी राजा आकर मेरी लंकापुरी को पीड़ित करेंगे, अतः आप धनुष की कोटि से इसे तोड़ दें। "भक्तवत्सल श्रीराम ने वैसा ही किया।

पद्मपुराण में उल्लेख है कि अयोध्या में रामराज्य—स्थापना के बाद प्रभु राम अपने भ्राता भरत के साथ मैत्री—यात्रा पर लंकापुरी गये थे। वहां से बिदाई के समय विभीषण के अनुरोध पर वह पुल तोडा गया। जो भी हो कालान्तर में वह पुल जलमग्न हो गया। रामनाथपुरम डिस्ट्रिक्ट गजेटियर 1972 में लिखा है कि "कुरगु पड़ई (वानर सेना) व्दारा निर्मित यह सेतु 1480 ई. तक भारत और श्रीलंका का भूस्थलीय सम्पर्ग मार्ग बना रहा। इसके बाद समुद्र में आये एक भीषण चक्रवात (बवण्डर) ने इसमें दरारें डाल दीं और पुल के पहलू (आयाम) बदल गए। सेतु के ऊपर पानी बहने लगा।"

वैज्ञानिक वर्तमान में वातावरण के बढ़ते तापक्रम (ग्लोबल—वार्मिंग) से परेशान हैं। सेतु का जलाक्रांत होना समुद्र जल स्तर में वृद्धि है,जो औसत तापमान के बढ़ने से सीधी—सीधी प्रभावित है।

निष्कर्ष– कितना अच्छा होगा, यदि इस पुरा प्रस्तर पुल को केंद्र और प्रदेश सरकार पर्यटन के विशेष पैकेज तैयार कर विश्व–धरोहर के रूप में मान्यता दिलाने का प्रयास करें। इसके लिए भारत के करोड़ों हिन्दू–मताबलम्बी जनता भावनात्मक सहयोग करेगी और उनका आभार भी मानेगी। इस महान अभियांत्रिकी आश्चर्य को सारी दुनिया खुली आंखों से देख सके ! इस पुल पर स्थित चौबीस तीर्थों (स्कन्द पुराण के अनुसार) पर स्नान और पूजन–अर्चन कर इहलौकिक एवं पारलौकिक जीवन सफल कर सके !! उसके लिए सरकार को भू–तकनीकी / रसायन अभियंत्रण के विशेषज्ञों की सहायता लेनी चाहिए जो शायद इस सेतु को समुद्र सतह से ऊपर ला सकें।







भोपाल परिसर

- MA(J) मास्टर ऑफ आर्ट्स (जर्नलिज्म)
- MA(MC) मास्टर ऑफ आट्र्स (मास कम्युनिकेशन)
- MSc(EM) मास्टर ऑफ साइंस (इलेक्ट्रॉनिक मीडिया)
- MA(APR) मास्टर ऑफ आर्ट्स (एडवरटाइजिंग एंड पब्लिक रिलेशन्स)
- MA(BJ) मास्टर ऑफ आर्ट्स (ब्रॉडकास्ट जर्नलिज्म)
- MBA(MBM) मास्टर ऑफ विजनेस एडमिनिस्ट्रेशन (मीडिया विजनेस मैनेजमेंट)
- MSc(FP) मास्टर ऑफ साइंस (फिल्म प्रोडवशन)
- MA(DJ) मास्टर ऑफ आर्ट्स (डिजिटल जर्नलिज्म)
- MSc(MR) मास्टर ऑफ साइंस (मीडिया रिसर्च)
- MSc(NM) मास्टर ऑफ साइंस (न्यू मीडिया)
- MCA मास्टर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन्स
- M(LIS) मास्टर ऑफ लाइब्रेरी एंड इंफोंमेशन साइंसेज
- BBA(EC) वैचलर ऑफ विजनेस एडमिनिस्ट्रेशन (ई-कॉमर्स)
- B.TECH(PP) बैचलर ऑफ टेक्नोलॉजी (प्रिंटिंग एंड पैकेर्जिंग)
- B.TECH(PP)LE वैचलर ऑफ टेक्नॉलॉजी (प्रिंटिंग एंड पैकेर्जिंग) लेटरल ऐंट्री

खण्डवा परिसर

• MA(J) मास्टर ऑफ आर्ट्स (जर्नलिज्म)

d,

- BA(MC) वैचलर ऑफ आर्ट्स (मास कम्प्युनिकेशन) (ऑनर्स) (NEP आधारित पाठ्यक्रम)
- PGDCA पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन कम्प्यूटर एप्लीकेशन्स
- DCA डिप्लोमा इन कम्प्यूटर एप्लीकेशन्स

दतिया परिसर

- MA(MC) मास्टर ऑफ आर्ट्स (मास कम्युनिकेशन)
- BA(MC) वैचलर ऑफ आर्ट्स (मास कम्युनिकेशन) (ऑनर्स) (NEP आधारित पाठ्यक्रम)
- BBA(EC) बैचलर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन (ई-कॉमर्स)
- PGDCA पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन कम्प्यूटर एप्लीकेशन्स
- DCA डिप्लोमा इन कम्प्यूटर एप्लीकेशन्स

रीवा परिसर

BSc(MM) बैचलर ऑफ साइंस (मल्टीमीडिया) (ऑनर्स)

BCA वैचलर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन्स (ऑनर्स

BSc(GA) वैचलर ऑफ साइंस (ग्राफिक्स एंड ऐनिमेशन) B(LIS) बैचलर ऑफ लाइब्रेरी एंड इंफॉर्मेशन साइंसेज

संबंधित विस्तुत जानकारी के लिए "आवेदन कैसे करें" देखें।

BA(MC) वैचलर ऑफ आटर्स (मास कम्युनिकेशन) (ऑनर्स)

BSc(EM) बैचलर ऑफ साइंस इलेक्ट्रॉनिक मीडिया (ऑनर्स)

विश्वविद्यालय द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) के अंतर्गत स्नातक स्तर पर

3/4 वर्षीय (6/8 सेमेस्टर) ऑनर्स पाठ्यक्रम प्रारंभ किए जा चुके हैं। NEP से

BA(JCW) वैचलर ऑफ आटर्स (जर्नलिज्म एंड क्रिएटिव राइटिंग) (ऑनर्स)

BSc(FCS) वैचलर ऑफ साइंस फिल्म एवं संचार अध्ययन (ऑनर्स)

B.Com (Management) बैचलर ऑफ कॉमर्स (मैनेजमेंट) (ऑनर्स)

BA(APR) वैचलर ऑफ आर्ट्स (एडवरटाइर्जिंग एंड पब्लिक रिलेशन्स)

MA(J) मास्टर ऑफ आर्ट्स (जर्नलिज्म)

(ऑनर्स)

ſ,

- MA(MC) मास्टर ऑफ आर्ट्स (मास कम्युनिकेशन)
- MSc(EM) मास्टर ऑफ साइंस (इलेक्ट्रॉनिक मीडिया)
- BA(MC) वैचलर ऑफ आर्ट्स (मास कम्युनिकेशन) (ऑनर्स) (NEP आधारित पाठ्यक्रम)
- BA(JCW) वैचलर ऑफ आर्ट्स (पत्रकारिता एवं सृजनात्मक लेखन) (ऑनर्स) (NEP आधारित पाठ्यक्रम)
- BCA बैचलर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन्स (ऑनर्स)
- B. Com.(CA) बैचलर ऑफ कॉमर्स (कम्प्यूटर एप्लीकेशन्स)
- PGDRJ पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन रूरल जर्नलिज्म
- PGDCA पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन कम्प्यूटर एप्लीकेशन्स
- DCA डिप्लोमा इन कम्प्यूटर एप्लीकेशन्स

विस्तृत जानकारी हेतु विश्वविद्यालय की वेबसाइट www.mcu.ac.in पर विजिट करें या कैम्पस में सम्पर्क करें 9893557565 (भोपाल), 0733-2920525, 9827282829 (खण्डवा), 7693861752 (रीवा) 9713150770 (दतिया)।



पॉलिथीन के केमिकल खाद्य पदार्थों को प्रदूषित करते हैं

2023

जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।



पॉलिथीन का इस्तेमाल न करें

हैंडलयुक्त एवं हैंडलरहित समस्त प्रकार की पॉलिथीन प्रतिबंधित है। कपड़े के थैले⁄बैग का उपयोग करें



नगर पालिक निगम जबलपुर 救







परमाणु ऊर्जा: राष्ट्र की प्रगति में अग्रसर 2

Follow Us at: facebook.com/npcilofficial

instagram.com/npcilofficial **b** youtube.com/@npcil-official

Supporting nation in driving ahead... NPCIL your future partner



द्वारा प्रकाशित: निगम योजना एवं निगम संचार निदेशालय न्युक्लियर पावर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (भारत सरकार का उद्यम) विक्रम साराभाई भवन, अणुशक्ति नगर, मुंबई - 400 094.

www.npcil.nic.in | www.npcilcareers.co.in contactus@npcil.co.in | mediarelations@npcil.co.in

Published by: Directorate of Corporate Planning and Corporate Communication Nuclear Power Corporation of India Limited (A Govt. of India Enterprise) Vikram Sarabhai Bhavan, Anushakti Nagar, Mumbai - 400 094.

www.npcil.nic.in | www.npcilcareers.co.in contactus@npcil.co.in | mediarelations@npcil.co.in

''पार्थना'' ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।। ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्। तेन त्यक्तेन भूञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।। विद्यां च अविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह। अविद्यया मृत्युं तीत्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते।। सर्वे भवन्तू सुखिनः सर्वे सन्तू निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग्वेत्।। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

विज्ञान भारती